भारतीय समाज, संस्कृति एवं पर्यावरण

श्रीमती सपना
अटिस्टेन्ट प्रोफेसर–शिक्षा शास्त्र विभाग
श्रीमती शारदा जौहरी नगर पालिका कन्या महाविद्यालय, कासगंज
E-mail : sapnachauhan5092018@gmail.com

सारांशिका

मानव एवं पर्यावरण का अटूट संबंध है। मनुष्य का अस्तित्व पर्यावरण पर ही निर्भर है। मानव के उद्‌भव तथा विकास में पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग है, यह उसके धर्म के मूलस्वरूप, रीति–रिवाज, व्रत–त्योहार ,संस्कार, मूल्य, विश्वास, जीवन पद्धतितथा उनके अन्य क्रियाकलापों में इस तरह समानता थी कि इसके बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना करना संभव नहीं है। प्रकृति के कण–कण के साथ एकात्मता का अनुभव करना, उसे कम से कम नुकसान पहुंचाना एवं उसका संरक्षण करना प्राचीन भारतीय संस्कृति का आदर्श रहा है। भारतीय मनीषियों ने पर्यावरण संरक्षण को सबसे पहले पहचाना तथा लोक मंगल के लिए इसका उपयोग किया। संस्कृति एक व्यापक शब्द है, संस्कृति अपना व्याकरण स्वयं रचती है उसमें सब कुछ समा जाता है ।संस्कृतिक गुण है जो मनुष्य में व्याप्त है। संस्कृति का शाब्दिक अर्थ उत्तम बनाना, परिष्कार करना तथा संशोधन करना है। हमारी संस्कृति तपोवन में पल्लवित और पोषित हुई उसकी आत्मा में प्रकृति–पर्यावरण का वास था और शुद्ध पर्यावरण ही उसकी शक्ति थी। भारतीय वैदिक ग्रंथों, पंचतंत्र, जातक कथाओं, पौराणिक कथाओं, साहित्य आदि सभी में प्रकृति के इस महान जन कल्याण कारी स्वरूप का वर्णन है। मनुष्य प्रकृति की एक महान रचना कही जाती है उसके विकासोन्मुखी दृष्टिकोण के कारण समाज का विस्तार एवं संस्कृति का विकास होता गया। प्रारंभ में मनुष्य का व्यवहार प्रकृति के साथ मैत्री पूर्ण था किंतु कालांतर में उसने प्रकृति के तत्वों का अतिशय दोहन–दोहन आरंभ कर दिया। उसका मैत्री भावति रोहित होता गया। आज मानव की विषैली सोच ने आकाश, जल, धरा, वायु सभी को प्रदूषित कर दिया है। समय से भी तेज भागती जिंदगी, भौतिकता की दौड़ में आगे निकल की चाह, यह मानव को न जाने की ओर ले जाएगी? आज हम 21वीं सदी में जीवन यापन कर रहे है। हमें यह आकलन करना होगा किन–किन विरासतों के साथ हम अगली सदी में प्रवेश करेंगे। यह कैसा दुखद तथ्य है कि ग्लोबल वार्मिंग, पिघलते ग्लेशियर, चारों ओर बढ़ता प्रदूषण प्रकृति को अपार क्षति पहुंचा रहा है। ऐसे नाजुक क्षणों में हमें भारतीय संस्कृति के सर्वेभवंतु सुखिनः के आवाहन की याद आती है। पर्यावरण संरक्षण का विचार हमारी भारतीय संस्कृति का मूल भाव तथा समाज का एक दायित्व रहा है, जिसे लोगों ने त्योहारों, धर्म–अधर्म, संस्कारों आदि के माध्यम से बखूबी निभाया था। आज हमें अपनी संस्कृति, पर्यावरण तथा उसके संसाधनों के संरक्षण का शुभ संकल्प लेते हुए, अपनी संस्कृति का अनुपालन करना चाहिए ताकि इस प्रकृति को बचाया जा सके एवं समस्त प्राणी उसकी गोद में शरण पा सकें।

मूल शब्द : पर्यावरण, भारतीय संस्कृति, संस्कार, मूल्य–विश्वास, जीवन पद्धति।

प्रस्तावना–पर्यावरण वर्तमान समय का अत्याधिक चर्चित एवं अति महत्वपूर्ण विषय है जिस पर पिछले कई दशकों से ही नहीं अपितु सदियों से बातें होती आ रही हैं। मनुष्य पर्यावरण की उपज है पर्यावरण केवल मनुष्य मात्र का ही नहीं अपितु संपूर्ण जीवजगत का आधार है पर्यावरण का अर्थ है प्रकृति का आवरण, यजुर्वेद में कहा गया है परितः आवरणं पर्यावरणम् अर्थात संपूर्ण जीव–जगत को जो सभी ओर से आवृत कर रहा है। वह पर्यावरण है, पर्यावरण में भौतिक तथा अभौतिक दोनों ही तत्व सम्मिलित है। जिनका मनुष्य प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों ही रूप में उपभोग कर रहे हैं। सामान्य रू‍प में हरी–भरी प्रकृति ही मनुष्य का पर्यावरण है। हरी से अभिप्राय सुजलांसुफलांमलयज शीतलांशस्य श्यामलाधरा से है एवं भरी से अभिप्राय पशु–पक्षियों जीव–जंतुओं की समृद्धि से है। मनुष्य तथा पर्यावरण का संबंध आदिकाल से ही रहा है मनुष्य को प्रकृति से पृथक नहीं किया जा सकता आज मानव भौतिकवादी संस्कृति के मोह में पड़कर पर्यावरण के दोहन में लगा हुआ है। भौतिक सुख सुविधाओं की चमक–दमक में मनुष्य अपने पूर्वजों से प्राप्त आध्यात्म शक्ति को खाता जा रहा है जिसके कारण मनुष्य का आंतरिक एवं बाहय दोनों पर्यावरण प्रदूषित हो गए हैं हमारा बाहय पर्यावरण हमारे आंतरिक पर्यावरण पर निर्भर करता है जब हम आंतरिक पर्यावरण (अंतः करण) को स्वच्छ रखते है तभी बाहय पर्यावरण (प्रकृति) को स्वच्छ रख सकते हैं। आज संपूर्ण विश्व जिस तरह किसी ना किसी प्राकृतिक आपदा आदि के कारण जन–धन की अपार क्षति उठा रहा है, उसने मनुष्य को फिर से प्रकृति के साथ अपने पूर्व संबंधों पर पुनः विचार हेतु बाध्य कर दिया है।

भारतीय संस्कृति प्रारंभ से ही पर्यावरण के प्रति संवेदन शील रही है यहाँ पर मनुष्य वृक्ष पूजा, सूर्य पूजा, जल पूजा, पृथ्वी पूजा आदि रूप में पर्यावरण की उपासना करता रहा है। मनुष्य से जुड़े सभी संस्कार, व्रत, त्यौहार, गीत–नृत्य, पूजा–पाठ आदि पर्यावरण से ही संबंधित हैं। भारतीय संस्कृति पर्यावरण संरक्षण प्रधान रही है हमारी संस्कृति में पर्यावरण के सभी तत्वों जैसे जल, अग्नि, वायु, वृक्ष आदि को देवताओं के स्वरूप में पूजा जाता रहा है तथा उस को संरक्षित किया गया है। भारतीय मनीषा का सर्वोत्त मग्रंथ आयुर्वेद प्रारंभ से ही यह उद्‌घोषित करता रहा है, कि मनुष्य को प्रकृति के अनुकूल आचरण करना चाहिए। आयुर्वेद तथा पर्यावरण का संबंध अत्यंत घनिष्ठ रहा है, मनुष्य के द्वारा आयुर्वेद में अनेको औषधियों का प्रयोग स्वास्थ्य रक्षा हेतु किया जाता रहा है, आयुर्वेद के अनुसार ऐसा कोई भी

वृक्ष नहीं जिसका उपयोग हमारे जीवन में ना हो सके प्रत्येक पेड़ पौधे के अलग–अलग गुण होते हैं तथा इन सभी गुणो का वर्णन आयुर्वेद में विस्तार पूर्वक किया गया है, जिसके द्वारा समाज में स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रतिचेतना का प्रसार किया गया। हमारी संस्कृति में औषधियः शांति वनस्पति यः शांति जैसे मंत्रों से प्रकृति की उपासना की गई है।

हमारे पूर्वजों ने वृक्षों, पर्वतों, मृदा, हवा, पानी, पशु–पक्षियों, नदियों आदि को अपने ही परिवार का अंग समझकर एवं उसके प्राकृतिक गुणों को जानकर ही ऐसी संस्कृति की नीव़ डाली जिसमें सभी की सहभागिता है। हमारी संस्कृति में पृथ्वी को माता का दर्जा दिया गया तथा नीर, नदियों, पहाड़ों, पेड़ों आदि को पूजनीय मानकर उसकी सुरक्षा एवं संरक्षण की व्यवस्था की गयी है। पीपल, तुलसी, नीम, बरगद, ऑवला आदि वृक्षों में भगवान का वास बताया गया तथा वृक्षों को न काटने की बात कही गई है, ताकि प्रकृति को संरक्षित किया जा सके। भारतीय ग्रंथों में लिखा है कि मानव शरीर पांच तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश से मिलकर बना है।इन्हीं पांचतत्व से ही पर्यावरण का निर्माण होता है। इनके असंतुलित होने से प्राकृतिक विनाश की स्थिति आ सकती है। अतः इनका संतुलन आवश्यक है। प्राचीन समय में पर्यावरण अध्ययन को विषय के रूप में तो नहीं पढ़ाया जाता था किंतु अलग–अलग प्रकार से पर्यावरण के प्रतिजन साधारण में चेतना जगाने का प्रयास नित्य निरंतर ऋषि–मुनियों द्वारा किया जाता रहा। भारतीय संस्कृति के विभिन्न दर्शनो, वेदों, पुराणों, उपनिषदों आदिमें मनुष्य को अपने शरीर को प्रकृति के अनुरूप ढालना तथा शारीरिक स्वास्थ्य बनाए रखने हेतु शुद्ध वायु तथा शुद्ध जल पर निर्भर रहना सिखाया गया है। सात्विक शाकाहारी भोजन की जन्म स्थली भारतीय संस्कृति ने सदैव शाकाहार पर बल दिया है। शाकाहार से हानिकारक गैसों का उत्सर्जन, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण को कम करने तथा जंगलों के काटे जाने से रोकने में भी सहायक होता है। प्राचीन भारतीय समाज में व्यक्ति का जीवन चार आश्रमों में विभाजित था ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास। इस आश्रम व्यवस्था में पहले आश्रम ब्रह्मचर्य तथा चौथे आश्रम सन्यास में व्यक्ति को अपना जीवन वनों में ही व्यतीत करना पड़ता था देखा जाए तो मनुष्य का जीवन और उसका ज्ञान, विज्ञान वनों में ही विकसित हुआ। इसलिए प्रकृति का संरक्षण करना समाज की आवश्यकता थी तथा सभी इस कार्य हेतु प्रयत्नशील रहा करते थे। मनुष्य प्रकृति से ही उत्पन्न हुआ तथा उस पर प्रकृति का ही नियंत्रण रहता है किंतु आज हम वैज्ञानिक उपलब्धियों तथा भौतिकता की चका चौंध में अपने मूलतत्व एवं संस्कृति को भूल चुके हैं। स्वार्थवश हम इस धरा की व्यवस्था में व्यवधान पैदा कर रहे हैं प्राचीन समय में सुख पूर्वक जीवन जीने का सार यही था कि व्यक्ति प्रकृति का उपयोग केवल अपनी अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति हेतु ही करता था तथा उसके प्रति कृतज्ञ होता एवं उसको संरक्षित करता था।

भूमि संरक्षण–इस पृथ्वी पर अनेकों प्रकार के जीव–जंतुओं पेड़–पौधे आदि स्थित है यह पृथ्वी ही जैव विविधता का पोषण एवं रक्षा करती है अथर्व वेद में कहा गया है हे धरती माँ!! मैं जो कुछ भी तुझसे लूंगा उतना ही होगा जिसे तू पुनः पैदा कर सके तेरे मर्म स्थल पर या तेरी जीवन शक्ति पर कभी आघात नहीं करूंगा। इस कथन से पृथ्वी के संरक्षण, माननीय संबंध, कर्तव्य, रक्षा आदि का संदेश देकर पर्यावरण बोध को जन्म दिया गया है।

वृक्ष संरक्षण–भारतीय संस्कृति में वृक्षों को भगवान शिव का रूप माना गया है जिस प्रकार से शिव ने विषपान किया तथा प्राणियों की रक्षा की उसी प्रकार से वृक्ष विषैली गैसों को पीकर अमृत मयी गैस का उत्सर्जन करते हैं यजुर्वेद में कहा गया है नमो वृक्ष शब्द योग हरि के शब्दों अर्थात सूर्य की किरणें जिनमें समाहित होती है ऐसे ही वृक्षों को प्रणाम है सभी वन रक्षकों को नमस्कार है। प्राचीन ग्रंथों में पेड़–पौधों का हमारे स्वास्थ्य, मानसिकता, विवाह, दांपत्य प्रेमभाव, प्रसन्नता, स्वभाव आदि पर पड़ने वाले प्रभाव की चर्चा मिलती है पुराने समय में यदि वृक्ष को अपरिहार्य कारणों से काटना पड़ ता था तो उससे क्षमा मांगने का प्रावधान प्रचलित था रात्रि में वृक्षों को छूना भी मना था। भारतीय संस्कृति में वनस्पति की प्रति आत्मीया तथा मानवता पूर्ण व्यवहार करने की परंपरा यदि आज भी प्रचलित रहती तो पर्यावरण संकट का यह सवाल ही पैदा नहीं होता यह भारत भूमि विभिन्न गुणकारी औषधियों से युक्त रही इसलिए इसके संरक्षण एवं संवर्ध नपर प्राचीन समय से ही बल दिया गया।

जल संरक्षण–संसार मे समस्त चेतन पदार्थों का जीवन जल पर निर्भर रहने के कारण इसका महत्व निर्विवाद है। जल संरक्षण आज मानव जाति की प्रथम आवश्यकता है। यजुर्वेद में जल के विषय में कहा गया कि दिव्य गुणों से युक्त जल सभी के लिए कल्याणकारी हो उसको ग्रहण करने से हमें परम आनंद एवं शांति की अनुभूति हो तथा पानी के द्वारा स्नान करने से हम रोग मुक्त हो। भारतीय ग्रंथों में कहा गया कि गांव की सीमा पर तालाब, कुआ, बावड़ी आदि का निर्माण कराना चाहिए। जल में कभी भी मल–मूत्र विषैले पदार्थ नहीं मिलाने चाहिए तथा नग्न स्नान नहीं करना चाहिए। इससे स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति में जल संरक्षण करने की प्रथा प्रचलित थी।

वायु संरक्षण–शुद्ध वायुमानव के लिए अति आवश्यक है। प्राचीन ग्रंथों में वायु को विशेष महत्व प्रदान करते हुए शत पथ ब्राह्मण ग्रंथों में कहा गया कि यज्ञ के द्वारा वातावरण शुद्ध होता है जिससे जीव जंतु को शुद्ध हवा एवं उनके द्वारा छोड़े गए गैसों से पेड़ पौधों को भोजन प्राप्त होता है प्राचीन ऋिषियों ने ऋग्वेद में कहा है कि हे वायु औषधि के रूप में विहार करके कल्याण और सुख प्रदान करो इस प्रकार से भारतीय संस्कृति ने वायु को संरक्षित तथा उसे शुद्ध रखने का संदेश दिया।

निष्कर्ष–प्रकृति मानव का तभी तक साथ देती है जब तक उसके नियमों के मुताबिक ही प्रकृति से लिया जाए। हमें भोजन, जल, वायु, जीवन जीने की सभी परिस्थितियां प्रकृति से ही प्राप्त होती है लेकिन बदले में हमने इसे प्रदूषण गंदगी आदि से भर दिया है। आज अनेकों जीवो की प्रजातियां विलुप्त होती जा रही हैं। जल स्रोत मानव बस्तियों के कूड़ेदान बनते जा रहे हैं। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण को जिस प्रकार से नुकसान पहुंचा रहा है वह संपूर्ण जीव जगत के लिए घातक है। आज की परिस्थितियों को देखते हुए मानव को अपनी प्रवृत्तियों में परिवर्तन लाना होगा, मनुष्य को पूर्व काल की भांति प्रकृति के सभी तत्वों के साथ सहयोग, स्नेह, सौहार्द, साहचर्य

स्थापित करना होगा। मनुष्य को समझना होगा कि उसका उज्जवल भविष्य आत्म नियंत्रण, उपभोग को कम करने, आध्यात्मिकता का विस्तार करने, विज्ञान का शांति एवं सार्थक कार्यों में उपयोग करने पर ही निर्भर है। आज हमें अपनी प्राचीन पर्यावरण संरक्षण की प्रथाओं को प्रमुखता देते हुए इनका दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ अनुगमन करना होगा तभी पर्यावरण संरक्षण को प्रगाढ़ता मिलेगी। भारतीय मनीषियों ने सर्वे भवंतु सुखिनः का भाव रखते हुए जन साधारण के लिए धर्म–अधर्म, आस्था, त्योहार, संस्कार आदि से संबंधित अनेकों नियम बनाएं जिन पर चल कर साधारण मनुष्य प्रकृति का कम से कम दोहन करें एवं प्रकृति के विकास पथ पर अग्रसर होता रहे। वास्तव में यही है भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिक पर्यावरण संरक्षण की विचार धारा जो हमें विश्व की अन्य संस्कृतियों से भिन्न बनाती है।

संदर्भः

- अवस्थी, चित्रलेखा (2014) भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं पर्यावरण, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद।
- गोयल ,एम. के. पर्यावरण शिक्षा विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2।
- जैन, संध्या (2015)वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना पर एक अध्ययन http://www.granthaalayah.com
- पाल, विजय कुमार, गोसाई, एम.एस. (2017) प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथ में पर्यावरण चेतनाः एक ऐतिहासिक अध्ययन, www.socialscience journal. in.vol 3, issue 2,P.no.107-110.
- यादव, वीरेंद्र सिंह (2015) भारतीय संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण, IJSIRS,Vol (3), Issue.
- पाल, विजय कुमार, गोसाई, एम.एस. (2017) प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथ में पर्यावरण चेतनाः एक ऐतिहासिक अध्ययन, www.socialscience journal. in. vol 3,issue 2,P.no.107-110.
- यादव, वीरेंद्रसिंह (2015) भारतीय संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण, IJSIRS, Vol(3), Issue
- यादव, वीरेंद्र सिंह (2015) भारतीय संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण, IJSIRS, Vol (3), Issue.